CHETANA
International Journal of Education
Impact Factor
SJIF-5.689
Peer Reviewed/
refereed Journal
ISSN-
Print-2231-3613,
Online-2455-8729

Prof.A.P.Sharma (25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 23rd April 2020, Revised on 28th April 2020; Accepted 30thApril 2020

आलेख

पश्च–कोरोना काल : शिक्षा की दिशायें
हम सबका एक ही प्रयास, सब ओर हो शिक्षा का प्रकाश

* पूनम श्रीवास्तव (व्याख्याता)
आकाशदीप टी.टी. गर्ल्स कॉलेज,
मानसरोवर, जयपुर, राजस्थान
ईमेल– ---------- मोबाईल – .....

मुख्य शब्द *. व्यक्तित्व, कर्णधार, कोरोना महामारी, ऑनलाइन शिक्षा आदि.*

शिक्षा ही सफलता की कुंजी है। बिना शिक्षा प्राप्त किये कोई भी व्यक्ति अपनी चरम ऊंचाईयों को नहीं छू सकता। एक अच्छी शिक्षा बेहतर भविष्य की नींव है। यह हममें आत्मविश्वास विकसित करने के साथ ही हमारे व्यक्तित्व निर्माण में भी सहायता करती है।

स्कूली शिक्षा सभी के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। स्कूली शिक्षा तंत्र को तीन भागों में बांटा गया है–प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, और उच्च माध्यमिक शिक्षा। शिक्षा के सभी स्तर अपना एक विशेष महत्व और स्थान रखते है। हम सभी अपने बच्चों को जो की हमारे देश के कर्णधार है सफलता की ओर जाते हुए देखना चाहते है जो केवल अच्छी और उचित शिक्षा के माध्यम से ही संभव है।

वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व कोरोना जैसी महामारी से लड़ रहा है। ऐसे समय में हमारा सम्पूर्ण जीवन अस्त–व्यस्त हो गया है और प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन को बचाने के लिए प्रयासरत है। जिसके कारण वह किसी भी तरह का सामाजिक कार्य करने में असमर्थ है क्योंकि इस महामारी से बचने का सबसे अच्छा उपाय यही है कि हम एक–दूसरे से सामाजिक दूरी बनाते हुए आगे बढ़े। कोरोना के कारण हमारे जीवन में अनेक बदलाव हो रहे है। जिससे शिक्षा का क्षेत्र भी अछूता नहीं हैं। हमारी शिक्षा की व्यवस्थाएँ चरमरा गई हैं क्योंकि हमारे देश में शिक्षा की अधिकांश व्यवस्था ऐसी है जिसमें शिक्षा प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी को कक्षा–कक्ष का सहारा लेना पड़ता है। कोरोना महामारी के कारण वर्तमान में शिक्षा की प्रक्रिया को विराम लग गया है क्योंकि शिक्षक व शिक्षार्थी का विद्यालय जाकर अध्ययन–अध्यापन कार्य करना संभव नहीं है।

क्या कोरोना ने हमें रोक दिया है? नहीं, जीवन रूका नहीं है, बल्कि उसने अपना रूप बदल लिया है। अपेक्षाएं और चुनौतियां नये रूप में हमारे सम्मुख आ रही है जिन्हें पूरा करने के लिए हमें भी नये तरीके अपनाने होंगे।

कोरोना महामारी से पहले मात्र 3 प्रतिशत विद्यार्थी ऑनलाइन के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करते थे लेकिन वर्तमान में पढ़ाई का एकमात्र जरिया ऑनलाइन शिक्षा बन गया है लेकिन अब प्रश्न यह उठता है कि भविष्य में शिक्षा देने के मध्यम में कितने बदलाव आ सकते हैं। दुनियां भर में कोरोना वायरस महामारी से 186 देश प्रभावित हुए है ऐसे में 1.2 बिलियन बच्चों कि शिक्षा पर असर पड़ रहा है। यह इतनी बड़ी संख्या है कि इनकी शिक्षा को लेकर चिंतित होना स्वाभाविक हैं लेकिन प्रश्न अभी भी वहीं है कि इतने

बड़े समूह के लिए शिक्षा की व्यवस्था कैसे की जाए तथा आने वाले समय में शिक्षा किस दिशा में आगे बढ़ेगी? किस मार्ग को अपनाकर 1.2 बिलियन बच्चों के लिए शिक्षा की सरल व स्वाभाविक व्यवस्थाए की जाएगीं?

कोरोना महामारी हमें जीवन जीने के नये ढ़ग सीखने के लिए प्रेरित कर रही है। इसी कड़ी में हमें शिक्षा के क्षेत्र में भी परिवर्तन करने की आवश्यकता है। हमें ऐसे कई टूल्स तैयार करने पड़ेगें जिसमें विद्यार्थियों के साथ–साथ शिक्षक और माता–पिता को भी ये बताया जाए कि कैसे ऑनलाईन लर्निंग आसानी से करवाई जा सकती हैं लेकिन हमें यह भी विचार करना होगा कि क्या ऑनलाइन शिक्षा देश कि शैक्षिक जरूरतों का हल है? क्या ऑनलाइन शिक्षा कक्षीय शिक्षा का समुचित विकल्प है और भारतीय परिवेश के अनुकूल है? इन सभी प्रश्नों के उत्तर जानने के साथ–साथ यह समझना भी जरूरी होगा कि शिक्षा के उद्देश्य क्या है? इन सब प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए हमें कहीं और जाने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि इनके उत्तर स्वयं हमारे पास है कि ऑनलाईन शिक्षा हमारे शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा नहीं करती है तथा साथ ही भारत में संसाधनों का अभाव भी ऑनलाइन शिक्षा को प्रेरित नहीं करता है।

शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हमें अपनी व्यवस्थाओं में परिवर्तन करना होगा, अपने पाठ्यक्रम में परिवर्तन करना होगा तथा साथ में हमें अपनी सोच में भी परिवर्तन लाना होगा। मोबाईल के स्थान पर टी.वी. के माध्यम से पढ़ाई की व्यवस्था की जाए। सम्पूर्ण देश का पाठ्यक्रम समान कर दिया जाए। विद्यार्थियों को प्रत्येक दिन विद्यालय बुलाने के स्थान पर सप्ताह में तीन से चार दिन ही आवश्यकतानुसार विद्यालय बुलाया जाए शेष दिन विद्यार्थी को पढ़ाई से जोड़े रखने के लिए ऑनलाइन कक्षाएँ लगाई जाए। शिक्षा किसी एक माध्यम से नहीं बल्कि अनेक माध्यमों से प्रदान की जाए। प्रत्येक विद्यालय में कम से कम एक कक्षा को डिजिटल स्मार्ट क्लास बनाया जाए। विद्यालयों द्वारा ऑनलाइन कक्षा हेतु एक एप तैयार किया जाए जिसमें सभी कक्षाओं के पाठ्यक्रम व पाठ्य सामग्री उपलब्ध रहें साथ ही इसमें विद्यार्थियों की ऑनलाइन उपस्थिति की भी व्यवस्था हो जिससे प्रत्येक वर्ग व स्तर का बालक अपने घर पर अपनी सुविधानुसार शिक्षा प्राप्त कर सकें। पाठ्यक्रम को कम किया जाए तथा उसमें ऐसी व्यवसायिक शिक्षा जो 'वर्क एट हॉम' पर आधारित हो देकर विद्यार्थी को आत्मनिर्भर बनने की ओर प्रेरित किया जाए साथ ही हमें मानसिक व शारीरिक स्वस्थ्य संबंधी विषयवस्तु का समावेश भी पाठ्यक्रम में किया जाए। यहीं समय की मांग है।

आओं एक समझदारी भरा कदम उठाये।

सबको नवाचार का पाठ पढ़ायें

*** Corresponding Author:**
पूनम श्रीवास्तव *(व्याख्याता)*
आकाशदीप टी.टी. गर्ल्स कॉलेज,
मानसरोवर, जयपुर, राजस्थान
ईमेल– ..... मोबाईल – .....